

I. उत्पादन

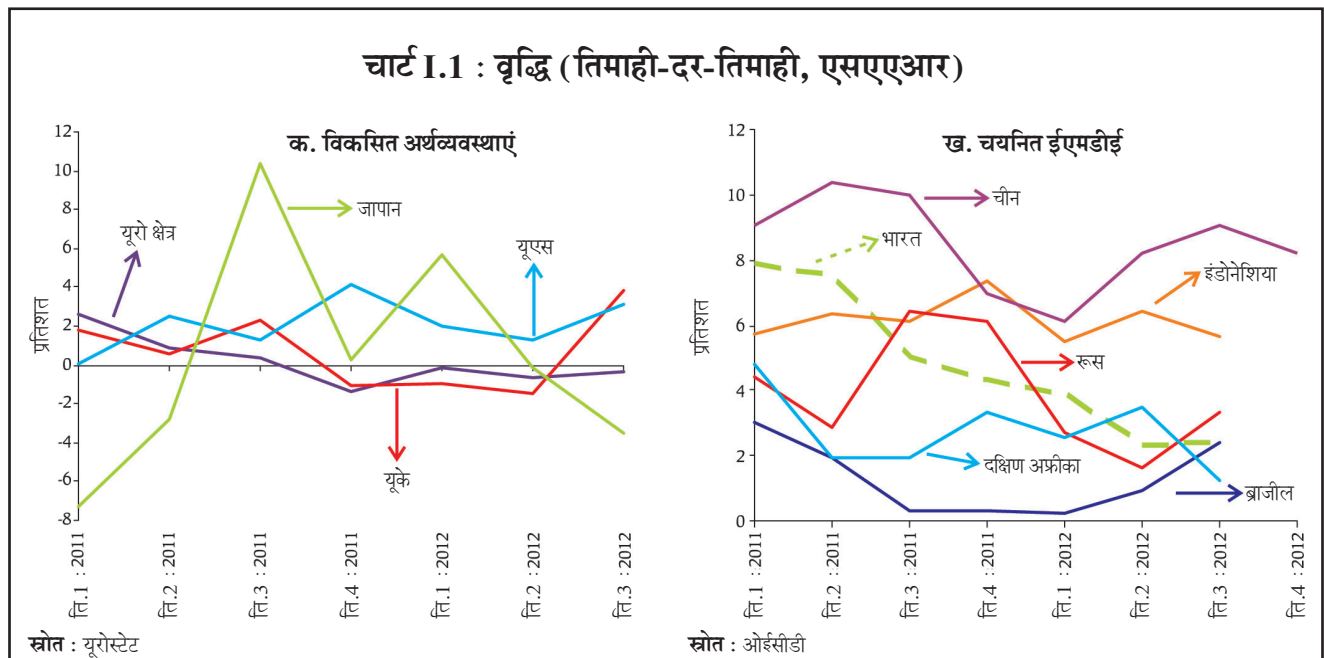
भारत की संवृद्धि दर 2012-13 की पहली तिमाही (ति1) के 5.5 प्रतिशत से कम होकर ति2 में 5.3 प्रतिशत रह गई। 2012-13 में कृषि की वृद्धि प्रवृत्ति से कम रहने की संभावना है क्योंकि खरीफ की कमी रबी की फसल से पूरी होने की संभावना नहीं है। औद्योगिक वृद्धि प्रवृत्ति से कम रहने की संभावना है जिसका कारण आपूर्ति और इंफ्रास्ट्रक्चर संबंधी बाधाएं और बाह्य मांग में मंदी है। सेवा क्षेत्र की वृद्धि में गिरावट हुई जिसका कारण पण्य उत्पादक क्षेत्रों में नरमी की स्थिति और इसके स्वयं के प्रेरकों का पिछड़ना था। इसके कारण, 2012-13 में वृद्धि रिजर्व बैंक के अक्टूबर 2012 के 5.8 प्रतिशत के अनुमान से कम रह सकती है। संरचनात्मक बाधाएं हटाने के उपाय और प्रयास सफल होने पर 2012-13 की ति4 से कुछ सुधार होने के बावजूद इस सुधार को 2013-14 में बनाए रखने के लिए कारोबारी गतिविधियों की बाधाओं को हटाने के लिए चहुमुखी प्रयास आवश्यक होंगे। अल्पावधि संदर्भ में वैश्विक सुधार मंद बने रहने की संभावना के चलते भारत में उत्पादन अंतर को पूरा करना चुनौतीपूर्ण होगा।

राजकोषीय समायोजन से 2013 में वैश्विक सुधार मंद रहने की संभावना है

I.1 2012 की ति3 में उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में समष्टि-आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार हुआ। किंतु अधिकतर उन्नत अर्थव्यवस्थाएं राजकोषीय समायोजन का सामना कर रही हैं जिससे 2013 में उक्त सुधार बने रहना अनिश्चित है।

I.2 अमरीकी अर्थव्यवस्था में जहां 2012 की ति3 में 3.1 प्रतिशत (वार्षिकीकृत तिमाही-दर-तिमाही) का अच्छा विस्तार हुआ, वहीं यह ति3 की तुलना में ति4 में वृद्धि कम होने की संभावना है। यूरो क्षेत्र में संकुचन की गति 2012 की ति2 से कम होकर ति3 में 0.3 प्रतिशत रह गई (चार्ट I.1)। स्पेन, इटली और पोर्तुगाल लगातार मंदी में बने रहे जबकि नीदरलैंड में जीडीपी में कमी आई। यूरो क्षेत्र का दिसंबर का संमिश्र पर्चेसिंग मैनेजर्स इंडेक्स (पीएमआई) दर्शाता है कि इस क्षेत्र में मंदी निरंतर बनी हुई है। अनुमान है कि इस क्षेत्र की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था - जर्मनी में भी 2012 की ति4 में संकुचन हुआ है।

I.3 उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के श्रम बाजारों में 2012 की ति4 में संमिश्र स्थिति थी। अमरीका में बेरोजगारी दर लगभग 7.8 प्रतिशत पर स्थिर बनी रही जिसमें पूर्ववर्ती तिमाही में सुधार हुआ था। यूके में बेरोजगारी दर सितंबर-नवंबर 2012 की अवधि में 0.1 प्रतिशत कम होकर 7.7 प्रतिशत

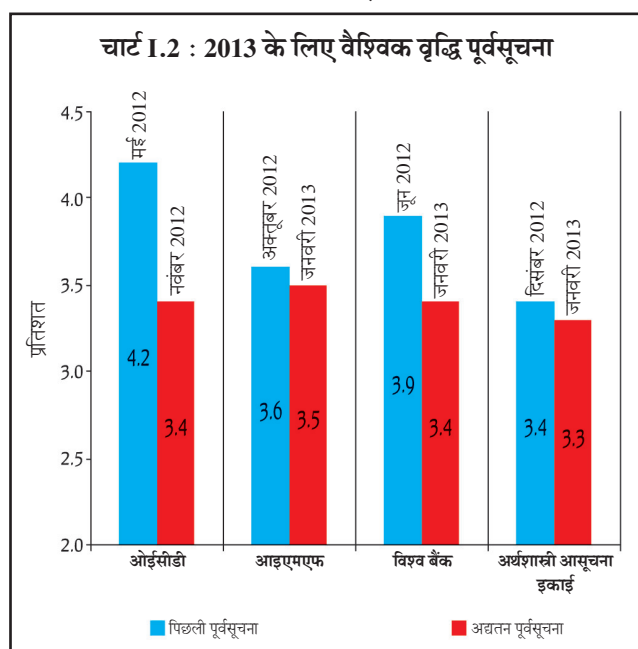


रह गई। किंतु यूरो क्षेत्र में बेरोजगारी की दर नवंबर 2012 में 11.8 की एक नई ऊंचाई पर पहुंच गई। स्पेन और ग्रीस में बेरोजगारी दर 26 प्रतिशत से अधिक हो गई जिसमें युवा बेरोजगारी दर लगभग 57 प्रतिशत थी। ऐसे स्तरों से यूरो क्षेत्र में समायोजन और स्थिरीकरण के सहायक राजकोषीय समेकन कार्यक्रमों में सामाजिक-आर्थिक बाधाएं आती हैं। इस प्रकार, यूरो क्षेत्र से वैश्विक वृद्धि के प्रति उभरने वाला जोखिम उच्च स्तर पर बना हुआ है।

1.4 उभरते बाजारों और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में वृद्धि 2012 की ति3 के दौरान दुर्बल हो गई। किंतु ति4 में इसमें कुछ सुधार होने के संकेत मिले हैं। चीन ने 2012 की ति4 में वर्ष-दर-वर्ष संदर्भ में दो वर्षों में वृद्धि में अपनी पहली बढ़त दर्ज की है। ब्राजील के पीएमआई में भी नवंबर और दिसंबर 2012 में उल्लेखनीय सुधार दिखा। अध्ययन से पता चलता है कि वृद्धि निम्नतम स्तर पर पहुंच गई थी।

1.5 हाल के महीनों में गतिविधियों में सुधार के चिह्न दिखने के बावजूद 2013 में सुधार की संभावना काफी अनिश्चित बनी हुई है। अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं ने वृद्धि संबंधी अपने पूर्वानुमानों को काफी कम कर दिया है (1.2)।

1.6 अमरीकी करदाता राहत अधिनियम, 2012 लागू करके अमरीका में फिस्कल क्लिफ पर सहायक डील से तात्कालिक जोखिम कम हो गया। किंतु इस डील से 2013 में अमरीकी वृद्धि पर कुछ प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।



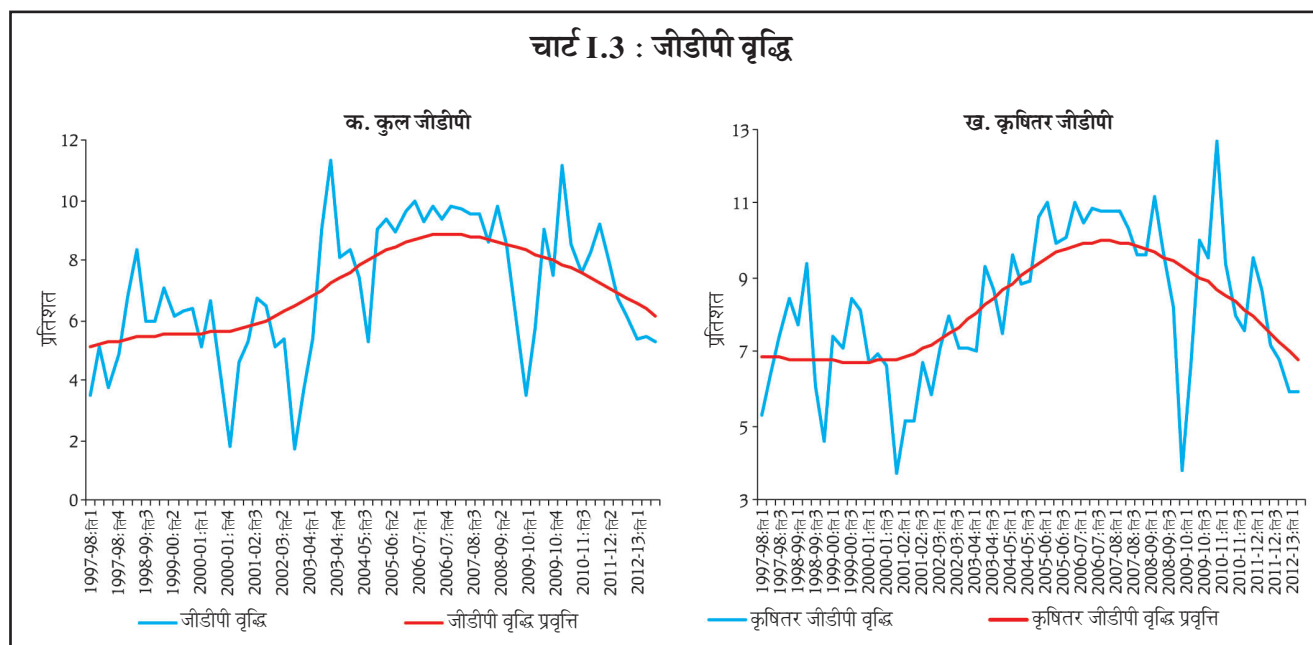
“नो डील” की स्थिति में फिस्कल क्लिफ से राजस्व बढ़कर लगभग 20 प्रतिशत हो जाने और व्यय में कुछ कमी आने की संभावना है। इस डील ने क्लिफ के कर पक्ष को काफी कम कर दिया है किंतु इसे पूर्णतः समाप्त नहीं किया है। 1 मार्च 2013 को स्वतः व्यय कटौती लागू होने से पहले यदि निगोशिएट नहीं किया गया तो व्यय पक्ष पर बजट पृथक्करण का प्रभाव पड़ सकता है। कुल मिलाकर, डील के कारण घाटे में मूल अनुमान से लगभग एक तिहाई की कमी आ सकती है। साथ ही, हालांकि 16.4 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर की उधार सीमा पूरी हो जाने से अमरीका में कांग्रेस से उच्चतर ऋण सीमा के अनुमोदन को अस्थायी रूप से रोक दिया गया है, फिर भी दीर्घकालिक ऋण उपलब्धता के प्रति चिंता बनी हुई है।

1.7 यूरो क्षेत्र में आर्थिक मूल तत्वों और नीतिगत समायोजन संबंधी चिंताएं बनी रहीं। जापान में अर्थव्यवस्था को मंदी से बाहर निकालने के लिए सरकार द्वारा 116 बिलियन अमरीकी डॉलर का एक और राजकोषीय प्रोत्साहन घोषित करने के बावजूद सरकारी ऋण संबंधी चिंता बनी रही।

1.8 उभरते बाजार और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में वृद्धि में अल्पकालिक सुधार उस सीमा तक निर्भर करता है जहां तक यूरो क्षेत्र में अनिश्चितता बढ़ने संबंधी बाह्य जोखिम और अमरीका में व्यापक राजकोषीय समायोजन की संभावना से बचा जाता है। अनिश्चित वृद्धि संभावना और सामान्यतः कम और स्थिर मुद्रास्फीति की पृष्ठभूमि में अनेक उभरते बाजार और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में केंद्रीय बैंकों ने 2012 में नीतिगत दरों को कम स्तर पर बनाए रखा या उन्हें कम कर दिया। किंतु मौद्रिक नीतिगत कार्रवाई की आवश्यकता और गुंजाइश में अर्थव्यवस्थाओं के बीच अंतर है जो कि मुख्यतः वृद्धि और स्फीतिकारी जोखिम में अंतर और पूर्ववर्ती प्रोत्साहनों से वित्तीय स्थिरता को जोखिम दर्शाती है।

भारत में वृद्धि में नरमी निरंतर बनी हुई है और इसमें सुधार के लिए कुछ और समय लग सकता है

1.9 2012-13 की ति2 में भारत में वृद्धि 5.3 प्रतिशत पर निरंतर मंद बनी रही और ति3 में भी यह मंद बनी रहने की संभावना है। यह मंदी वैश्विक समष्टि-आर्थिक वातावरण की अनिश्चितता के साथ ही देशी कारकों जैसे कि वास्तविक निवेश (सकल नियत पूंजी निर्माण) में कम वृद्धि और कमजोर

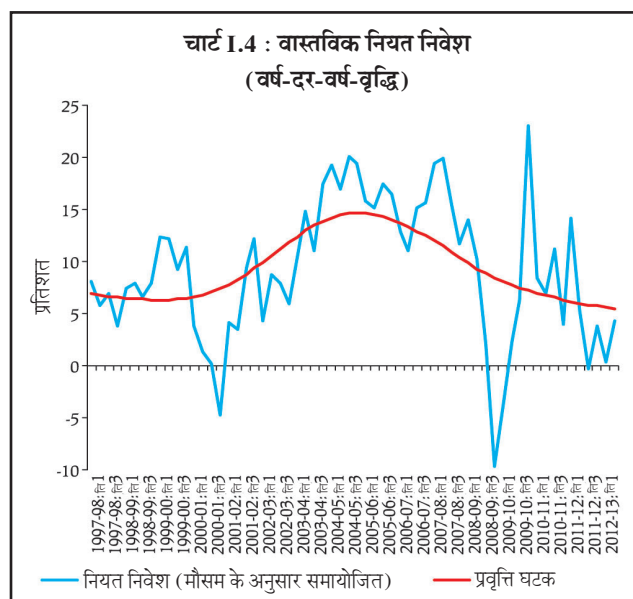


दक्षिण-पश्चिम मानसून को दर्शाता है। इसके परिणामस्वरूप 2012-13 की पहली छमाही में वृद्धि 5.4 प्रतिशत रही जो कि 2011-12 की पहली छमाही के 7.3 प्रतिशत से कम थी (चार्ट I.3)।

I.10 आगे, मुद्रास्फीति कम होने और वृद्धि निम्न स्तर पर पहुंच जाने के बावजूद, 2012-13 में वृद्धि 5.8 प्रतिशत रहने का रिज़र्व बैंक के अनुमान को अधोमुखी जोखिम का सामना करना पड़ सकता है। इसका मुख्य कारण यह है कि सरकार द्वारा घोषित विभिन्न नीतिगत उपायों का सकारात्मक असर जारी किए गए बहुत से आंकड़ों में अभी पूर्णतः प्रकट नहीं हुआ है जिसका आंशिक कारण नीतिगत उपायों का असर होने में समय लगना और आपूर्ति की संरचनात्मक बाधाएं बनी रहना है। इसके अलावा, वास्तविक नियत निवेश 2005-06 के शीर्ष से कम होता जा रहा है (चार्ट I.4)।

कृषि और उद्योग से वृद्धि 2012-13 की ति2 में और कम हो गई

I.11 2012-13 की पहली छमाही में सभी प्रमुख क्षेत्रों में गिरावट देखी गई। कमजोर दक्षिण-पश्चिम मानसून का कृषि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। औद्योगिक मंदी का कारण विनिर्माण और “बिजली, गैस तथा जल आपूर्ति” में नरमी था। सेवा क्षेत्र की वृद्धि में गिरावट का मुख्य कारण “व्यापार, होटल, परिवहन, भंडारन और संप्रेषण” था जबकि अन्य उप क्षेत्रों में सुधार हुआ था (सारणी I.1)।



I.12 उद्योग और सेवा क्षेत्र में मंदी को देखते हुए योजना आयोग ने बारहवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान अर्थव्यवस्था के औसत वार्षिक वृद्धि के लक्ष्य को कम करके 8.0 प्रतिशत किया (पहले 8.2 प्रतिशत)। पिछली योजनावधि के दौरान 7.9 प्रतिशत वृद्धि हुई थी। समग्रतः यह अनुमान है कि वृद्धि दर बारहवीं योजना के अंतिम वर्ष अर्थात् 2016-17 तक क्रमिक रूप से बढ़कर 9.0 प्रतिशत हो जाएगी। वैश्विक मांग में नरमी और गंभीर संरचनात्मक मुद्दों, जिनपर तुरंत ध्यान देने की आवश्यकता है, के चलते यह कार्य कठिन

सारणी 1.1 : जीडीपी को क्षेत्र-वार वृद्धि दर (2004-05 के मूल्यों पर)

(प्रतिशत)

मद	2010-11*	2011-12#	2011-12				2012-13		2011-12	2012-13
			ति.1	ति.2	ति.3	ति.4	ति.1	ति.2	एच.1	एच.1
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1. कृषि और संबद्ध कार्यकलाप	7.0	2.8	3.7	3.1	2.8	1.7	2.9	1.2	3.4	2.1
2. उद्योग	6.8	2.6	6.5	2.7	0.9	0.7	0.8	1.2	4.6	1.0
2.1 खनन एवं उत्खनन	5.0	-0.9	-0.2	-5.4	-2.8	4.3	0.1	1.9	-2.8	0.9
2.2 विनिर्माण	7.6	2.5	7.3	2.9	0.6	-0.3	0.2	0.8	5.1	0.5
2.3 बिजली, गैस और जलापूर्ति	3.0	7.9	7.9	9.8	9.0	4.9	6.3	3.4	8.9	4.8
3. सेवाएं	9.2	8.5	9.3	8.5	8.7	7.5	7.4	7.1	8.9	7.2
3.1 व्यापार, होटल, परिवहन, भंडार और संचार	11.1	9.9	13.8	9.5	10.0	7.0	4.0	5.5	11.6	4.7
3.2 वित्तपोषण, बीमा, स्थावर संपदा और कारोबारी सेवाएं	10.4	9.6	9.4	9.9	9.1	10.0	10.8	9.4	9.6	10.1
3.3 सामुदायिक, सामाजिक और व्यक्तिगत सेवाएं	4.5	5.8	3.2	6.1	6.4	7.1	7.9	7.5	4.6	7.7
3.4 निर्माण	8.0	5.3	3.5	6.3	6.6	4.8	10.9	6.7	4.9	8.8
4. कारक लागत पर जीडीपी (कुल 1 से 3)	8.4	6.5	8.0	6.7	6.1	5.3	5.5	5.3	7.3	5.4

*: त्वरित अनुमान

#: संशोधित अनुमान

स्रोत : केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय

दिख रहा है। उक्त अवधि के दौरान इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्र में कुल निवेश का ₹56.3 ट्रिलियन (लगभग 1 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर) का अनुमान है। इस लक्ष्य की प्राप्ति इस बात पर निर्भर करेगी कि इंफ्रास्ट्रक्चर में निवेश में निजी निवेश का हिस्सा पिछली योजना के 38 प्रतिशत से बढ़ाकर बारहवीं योजना में 48 प्रतिशत हो जाए।

कम वर्षा के बावजूद रबी फसल सामान्य रहने का अनुमान है

I.13 अगस्त-सितंबर में वर्षा में सुधार होने से मिट्टी की नमी बनी रहने में सहायता मिली। उत्तर-पूर्वी मानसून सामान्य से कम बना रहने के बावजूद रबी फसल की बुवाई प्रभावित नहीं हुई क्योंकि जलाशयों में जल स्तर संतोषजनक था। इस वर्ष अब तक प्रमुख रबी फसलों के अंतर्गत बुवाई पिछले वर्ष से तुलनीय है (सारणी I.2)।

I.14 खाद्यान्न का उच्च स्टॉक यह दर्शाता है कि इस समय देश गेहूं और चावल के मामले में आत्म निर्भर है (चार्ट I.5)। किंतु हाल के महीनों में अनाज और मुख्यतः गेहूं और चावल के मूल्य अधिक बने रहे।

सारणी 1.2 : रबी की बुवाई की प्रगति

(मिलियन हेक्टेयर में)

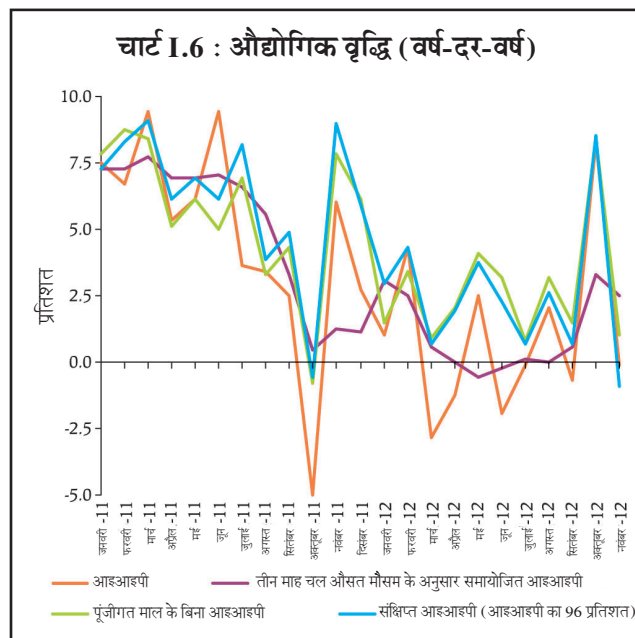
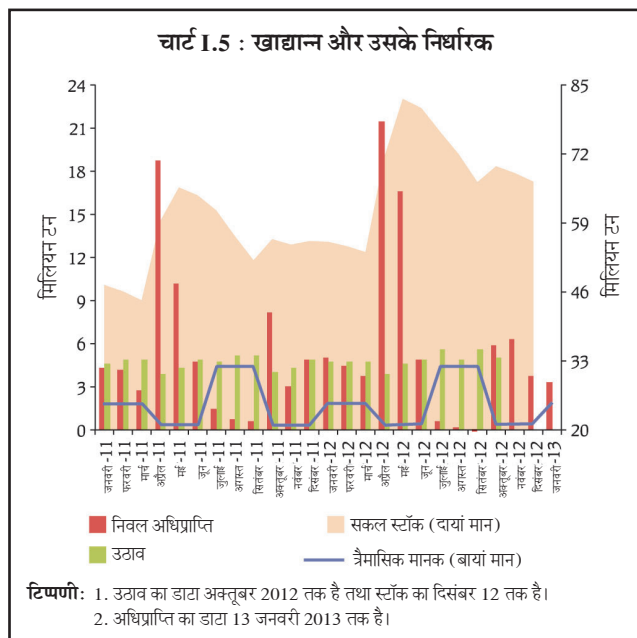
फसल	निम्नलिखित तारीख को सामान्य	2011-12*	2012-13*	पिछले वर्ष से प्रतिशत में परिवर्तन	सामान्य से प्रतिशत में अंतर
1	2	3	4	5	6
खाद्यान्न	49.3	50.8	50.7	-0.2	2.8
गेहूं	28.2	29.6	29.5	-0.3	4.6
चावल	1.3	1.0	0.9	-10.0	-30.8
मोटे अनाज	6.3	5.8	6.1	5.2	-3.2
धान्य	35.8	36.5	36.4	-0.3	1.7
दाल	13.5	14.3	14.2	-0.7	5.2
तिलहन	8.7	8.4	8.5	1.2	-2.3
सभी फसले	58.0	59.2	59.2	0.0	2.1

*: जनवरी 18.

स्रोत : कृषि मंत्रालय, भारत सरकार।

औद्योगिक निष्पादन में दुर्बलता बनी रहने की संभावना है

I.15 दुर्बल वैश्विक मांग, दुर्बल आपूर्ति लिंकेज, उच्च निविष्टि लागत और मंद निवेश गतिविधियों के चलते जुलाई 2011 से औद्योगिक वृद्धि नरम बनी रही। 2012-13 (अप्रैल-नवंबर) के दौरान औद्योगिक वृद्धि कम होकर 1.0 प्रतिशत रह गई। अक्टूबर 2012 में अनुकूल आधार



प्रभाव और त्यौहारों से संबंधित उत्पादन में रही तेजी को छोड़ दें तो बाकी समय सभी क्षेत्रों में नरमी बनी रही थी। औद्योगिक क्षेत्र मुख्यतः पूंजीगत माल और खनन क्षेत्र के उत्पादन में गिरावट से प्रभावित रहा (सारणी I.3)। मंद निवेश गतिविधियों के कारण पूंजीगत माल के उत्पादन में गिरावट हुई जबकि विनियामक और पर्यावरण संबंधी मामलों ने खनन क्षेत्र के उत्पादन को प्रभावित किया। पूंजीगत माल को

छोड़कर, अप्रैल-नवंबर 2012 में समग्र आईआईपी की वृद्धि दर 3.0 प्रतिशत थी (चाट 1.6)। रिजर्व बैंक द्वारा अस्थिर मंदों को छोड़कर निकाली गई आईआईपी (आईआईपी के 96 प्रतिशत) उसी अवधि की समग्र आईआईपी से अधिक वृद्धि दर्शाती है।

सारणी I.3 : औद्योगिक उत्पादन का सूचकांक : उद्योगों का क्षेत्र-वार और उपयोग आधारित वर्गीकरण

(प्रतिशत)

उद्योग समूह	आईआईपी में भारांक	वृद्धि दर			भारत अंशदान#		
		अप्रैल-मार्च		अप्रैल-नवंबर	अप्रैल-मार्च		अप्रैल-नवंबर
		2011-12	2011		2011-12	2011	
1	2	3	4	5	6	7	8
क्षेत्र-वार							
खनन	14.2	-2.0	-2.4	-1.5	-7.6	-7.1	-15.9
विनिर्माण	75.5	3.0	4.2	1.0	83.2	85.7	76.1
बिजली	10.3	8.2	9.5	4.4	24.3	21.6	40.1
उपयोग-आधारित							
मूल वस्तुएं	45.7	5.5	6.3	2.8	74.5	64.8	110.5
पूंजीगत वस्तुएं	8.8	-4.0	-1.0	-11.1	-20.4	-3.8	-152.0
मध्यवर्ती वस्तुएं	15.7	-0.6	-0.6	1.8	-3.0	-2.0	24.1
उपभोक्ता वस्तुएं (क + ख)	29.8	4.4	5.0	3.8	48.6	41.2	117.3
क) उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुएं	8.5	2.6	5.2	5.2	13.2	19.7	76.3
ख) उपभोक्ता गैर टिकाऊ वस्तुएं	21.3	5.9	4.9	2.5	35.3	21.5	40.7
सामान्य	100	2.9	3.8	1.0	100	100	100

अ : अर्नातिम

: पूर्णांकन के कारण आंकड़े 100 तक नहीं होंगे

स्रोत : केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय

1.16 विनिर्माण क्षेत्र में अप्रैल-नवंबर 2012 के दौरान तेज गिरावट देखी गई। विनिर्माण क्षेत्र के अंतर्गत मशीनरी और उपस्कर, इलेक्ट्रिकल मशीनरी और गणना की मशीनरी जैसे पूंजीगत माल के उद्योगों में उत्पादन में कमी आई। उपभोग मांग में नरमी से मोटर वाहन, खाद्य उत्पाद और परिधान उद्योग की वृद्धि प्रभावित हुई।

1.17 विश्वसनीय बिजली आपूर्ति की कमी लघु और मध्यम उद्योगों की क्षमता के उपयोग में बड़ी बाधा के रूप में उभरी है। अप्रैल-नवंबर 2012 के दौरान बिजली उत्पादन में गिरावट आई जिसका कारण कमजोर मानसून और कोयले की आपूर्ति में कमी था। थर्मल पावर का क्षमता उपयोग या प्लांट लोड फैक्टर अप्रैल-दिसंबर 2012 के दौरान 69.6 प्रतिशत था जबकि पिछले वर्ष की इसी अवधि के दौरान यह 71.9 प्रतिशत था। कोयले की कमी चालू वर्ष में प्लांट लोड फैक्टर में कमी का मुख्य कारण था। 7 जनवरी 2013 को 90 थर्मल पावर स्टेशनों में से 36 में 7 दिन से कम का कोयले का स्टॉक था (गंभीर स्थिति) जिनमें से 22 पावर स्टेशनों में 4 दिन से कम का स्टॉक था (अति गंभीर स्थिति) जबकि सामान्य स्थिति में यह 22 दिन का होना चाहिए।

1.18 निवेश गतिविधियां मंद रहने के कारण औद्योगिक वृद्धि में सुधार की संभावना दुर्बल दिखती है। निर्यात माध्यम की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है। अतः भारत में औद्योगिक सुधार के लिए वैश्विक वृद्धि में सुधार होना महत्वपूर्ण है। देशी और वैश्विक आईआईपी के बीच मजबूत सह-क्रिया होती

है; अप्रैल 2008 से नवंबर 2012 के बीच इन दोनों के बीच सहसंबंध सहगुणांक 0.7 प्रतिशत था।

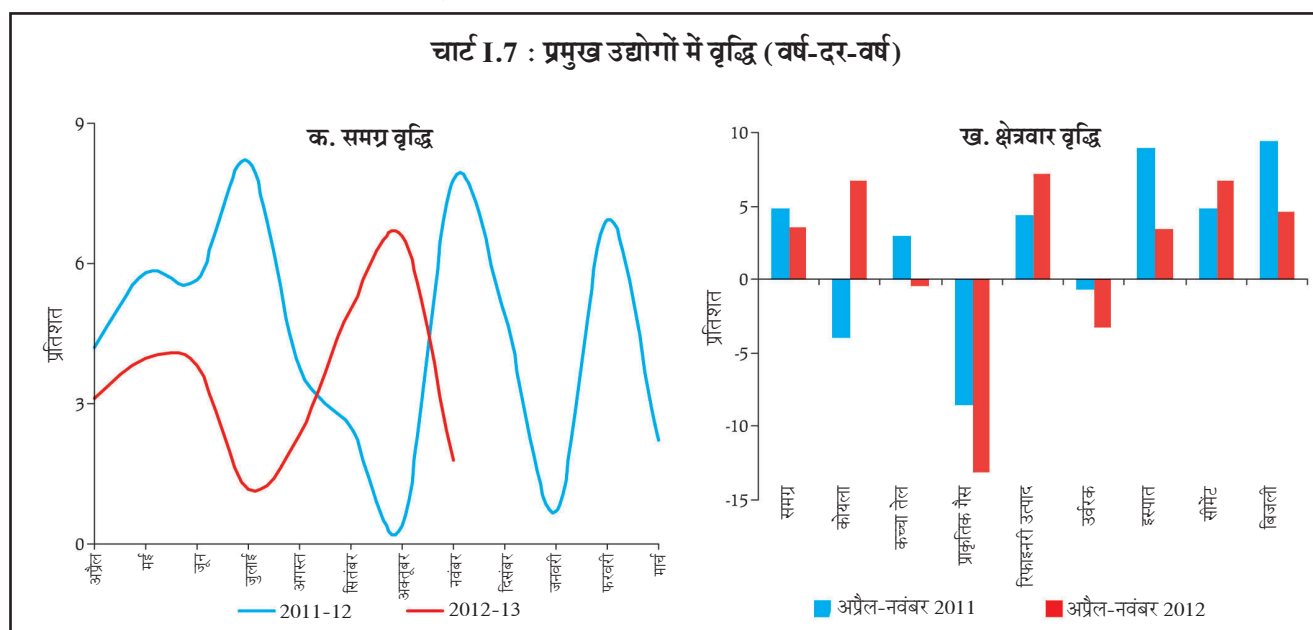
कोर उद्योगों में सुधार की गति अभी भी तेज नहीं हुई है

1.19 आठ कोर इंफ्रास्ट्रक्चर उद्योगों में वृद्धि अप्रैल-नवंबर 2012 के दौरान कम होकर 3.5 प्रतिशत रह गई जो कि पिछले वर्ष की इसी अवधि में 4.8 प्रतिशत थी। जहां इस अवधि में कोयला, सीमेंट और पेट्रोलियम शुद्धिकरण उत्पादन में वृद्धि हुई, वहीं बिजली और इस्पात के उत्पादन में गिरावट से यह प्रभाव कम हो गया (चार्ट 1.7)।

1.20 कोर उद्योगों की मंद वृद्धि औद्योगिक उत्पादन के संबंध में एक बाधा बनी हुई है। लौह अयस्क और कोयला खनन जैसे क्षेत्रों संबंधी नीतिगत अनिश्चय की स्थिति से इस्पात और बिजली उद्योगों के उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। कोयले के नए प्रखंडों के आबंटन और सीआईएल के नए कोयला क्षेत्रों से उत्पादन शुरू करने के लिए सरकार द्वारा हाल ही में किए गए उपायों से आगे कोयले के उत्पादन में तेजी आने की संभावना है। किंतु इस बीच इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्र की बाधाएं बनी हुई हैं (अध्याय 2 देखें)।

क्षमता उपयोग में कुछ वृद्धि हुई

1.21 रिज़र्व बैंक के आदेश बही, इन्वेंटरी और क्षमता उपयोग सर्वेक्षण के 19 वें दौर से नापा गया क्षमता उपयोग 2012-13 की ति2 में कुछ बढ़ गया जो कि पिछली तिमाही

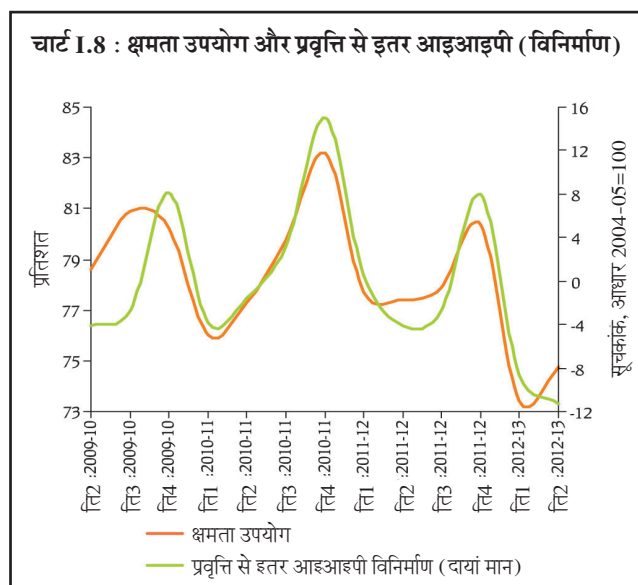


में निम्नतम स्तर पर पहुंच गया था ("http://www.rbi.org.in/OBICUS19)। क्षमता उपयोग और डी-ट्रेंडेड आईआईपी विनिर्माण के बीच व्यापक सह-क्रिया है (चार्ट I.8)। क्रमिक तिमाही आधार पर, 2012-13 की ति2 में नए आदेशों में कमी आई और कच्चे माल की इंटेंटरी की तुलना में तैयार माल की इंटेंटरी में तेज वृद्धि हुई।

सेवा क्षेत्र संकेतकों के प्रमुख संकेतकों में कमी आई

I.22 2012-13 की पहली छमाही में सेवा क्षेत्र की वृद्धि में कमी आने का मुख्य कारण “व्यापार, होटल, परिवहन, भंडारण और संप्रेषण” में तेज गिरावट होना था। व्यापारी गतिविधियों से संबंधित सेवाओं में मंदी देशी औद्योगिक स्थिति की मंदी को दर्शाती है।

I.23 भारत में दूरसंचार उद्योग की वृद्धि में हाल की अवधि में काफी गिरावट देखी गई जिसका कारण संतृप्ति (संचुरेशन) में वृद्धि और विनियामकीय अनिश्चितता था। प्रतिस्पर्धा में वृद्धि होने से मूल्यन पर असर हुआ जिससे प्रति उपयोगकर्ता औसत राजस्व कम होकर विश्व के निम्नतम स्तर पर पहुंच गया। ध्वनि सेवाओं से मिलने वाले राजस्व में गिरावट का यह अर्थ दिख रहा है कि अब कारोबार मुख्यतः वायरलेस डाटा सेवाओं से प्रेरित रहेगा। इसी समय, दूरसंचार क्षेत्र की निरंतर वृद्धि के लिए यह आवश्यक है कि एक उपयुक्त प्रणाली स्थापित की जाए ताकि प्रतिस्पर्धा और समेकन के बीच संतुलन बनाया जा सके जिससे दूरसंचार सेवाओं के उपयोगकर्ता और प्रदाताओं - दोनों को लाभ मिल सके।



I.24 आगे, सेवा क्षेत्र की गतिविधियों के विभिन्न संकेतक और रिज़र्व बैंक के सेवा क्षेत्र के संमिश्र संकेतक मंद पड़ रही वृद्धि की ओर संकेत कर रहे हैं (सारणी I.4 और चार्ट I.9)। नवंबर-दिसंबर 2012 के दौरान आटोमोबाइल की बिक्री और रेलवे भाड़े की आय में काफी गिरावट आई। विदेशी यात्रियों का आगमन 2012-13 में कम हुआ और बंदरगाहों पर हैंडल किए गए माल में नवंबर-दिसंबर 2012 में गिरावट आई। वैश्विक वृद्धि की अनिश्चित संभावना के चलते सेवा निर्यात भी कम रहने की संभावना है।

2012-13 की ति1 में रोजगार की स्थिति दुर्बल हुई

I.25 श्रम ब्यूरो द्वारा अर्थव्यवस्था के चुनिंदा क्षेत्रों में किए गए 15 तिमाही क्विक रोजगार सर्वेक्षण के अनुसार 2012-13 की ति1 में रोजगार वृद्धि पिछली तिमाही की तुलना में कम हो गई। किंतु हाल के वर्षों में रोजगार में वृद्धि हुई है। उद्योगों के हाल के वार्षिक सर्वेक्षण के अनुसार संगठित औद्योगिक क्षेत्र में रोजगार में 2010-11 में 7.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि प्रति कर्मचारी वेतन में 14.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई। 2001-

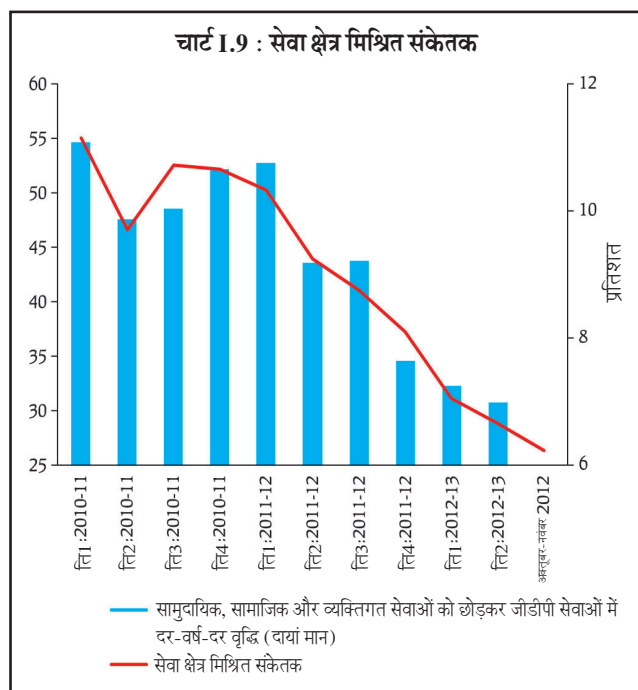
सारणी I.4 : सेवा क्षेत्र की गतिविधियों के संकेतक

(वृद्धि प्रतिशत में)

सेवा क्षेत्र के संकेतक	2011-12	अप्रैल-दिसंबर	अप्रैल-दिसंबर
		2011-12	2012-13
1	2	3	4
पर्यटकों का आगमन	8.6	9.4	3.0
सीमेंट	6.7	4.8#	6.7#
इस्पात	7.0	8.9#	3.4#
ऑटोमोबाइल बिक्री	11.2	11.0	4.6
रेलवे राजस्व अर्जक माल परिवहन	5.2	4.5	4.5
प्रमुख बंदरगाहों पर ढोया गया माल (कार्गो)	-1.7	0.4	-3.1
नागर उड्डयन			
देशी माल आवा जाही	-4.8	-6.0*	-1.1*
देशी यात्रियों की आवा जाही	15.1	19.0*	-5.3*
अंतरराष्ट्रीय माल आवा जाही	-1.9	0.1*	-4.5*
विदेशी यात्रियों की आवा जाह	7.6	7.8*	1.9*
वित्तीय सेवाएं संकेतक			
Aggregate Deposit	13.5	12.0	9.6
गैर-खाद्य क्रेडिट	16.8	10.4	8.6

*: आंकड़े अप्रैल-अक्टूबर के हैं। #: आंकड़े अप्रैल-नवंबर के हैं।

स्रोत : सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, पर्यटन मंत्रालय, एसएमआईई और सीएमआईई।



10 के दशक के उत्तरार्ध में रोजगार और वेतन - दोनों में काफी वृद्धि हुई (सारणी 1.5)।

2012-13 की दूसरी छमाही में प्रवृत्ति से कम वृद्धि बनी रहने की संभावना है

1.26 2012-13 के दौरान खरीफ में कमी होने के बावजूद कृषि तथा संबंधित कार्यों की समग्र वृद्धि सकारात्मक बनी रहने की संभावना है। इस उत्पादन में लगभग एक तिहाई हिस्सा खाद्यान्न और गैर-खाद्यान्न फसल का था जिसमें बागबानी और पशुधन का हिस्सा आधा था और शेष वानिकी तथा मत्स्य व्यवसाय का था।

सारणी 1.5 : रोज़गार और मज़दूरी सांख्यिकी

	ग्रामीण	शहरी	जोड़
1	2	3	4
रोजगार में वृद्धि (प्रतिशत)			
2000s	6.3	4.1	4.9
पहली छमाही	4.8	1.1	2.5
दूसरी छमाही	7.8	7.2	7.2
प्रति मजदूर मजदूरी में वृद्धि (प्रतिशत)			
2000s	7.1	5.9	6.2
पहली छमाही	2.6	2.0	2.0
दूसरी छमाही	11.5	9.8	10.4

स्रोत : वार्षिक उद्योग सर्वेक्षण, एमओएसपीआइ, भारत सरकार

1.27 औद्योगिक निष्पादन की नरमी बनी रहने के कारण 2012-13 की दूसरी छमाही में वृद्धि प्रवृत्ति से कम बनी रहने की संभावना है। दुर्बल औद्योगिक वृद्धि और प्रतिकूल वैश्विक आर्थिक स्थिति ने सेवा क्षेत्र की गति को कम कर दिया जिसका जीडीपी में दो तिहाई हिस्सा होता है। किंतु निर्माण उप-क्षेत्र अब तक मजबूत रहा है और मानसून मौसम के अंत तक इसमें और अधिक सुधार होने की संभावना है।

1.28 सितंबर 2012 के मध्य में घोषित सुधारों में से घोषित कुछ सुधारों को लागू करने में हो रही प्रगति से 2013-14 में स्थिति में सुधार शुरू होने की संभावना है। इनमें अन्य बातों के साथ-साथ मल्टि-ब्रांड रिटेल में एफडीआई का उदारीकरण, बैंकारी विनियमन अधिनियम में संशोधन और बृहद परियोजनाएं लागू करने के लिए अनुमोदन/अनुमति पर निर्णय शीघ्र लेने के लिए प्रधान मंत्री की अध्यक्षता में निवेश पर कैबिनेट समिति का गठन शामिल है। इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं के लिए दीर्घकालिक संसाधन उपलब्ध कराने के लिए ऋण कोष की स्थापना से उन वित्तीय बाधाओं को कम करने में मदद मिलेगी जिनसे इस समय यह क्षेत्र जूझ रहा है। जनरल एंटी-अवॉइडंस नियमावली (जीएएआर) पर विशेषज्ञ समिति की प्रमुख सिफारिशों को सरकार स्वीकार कर रही है, जो कि कराधान पहलुओं को अधिक स्पष्ट करेगी, से वित्तीयन में सुधार होने की संभावना है।

1.29 अमरीकी ‘‘राजकोषीय क्लिफ’’ संबंधी मामलों और यूरो क्षेत्र में वित्तीय दुर्बलता संबंधी मामलों का कुछ समाधान निकलने के कारण वैश्विक जोखिम में कुछ कमी आई है। किंतु यूरो क्षेत्र की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में संकुचन होने के कारण यूरो क्षेत्र का जोखिम आगे काफी बना रहेगा। इस संबंध में यह अनिवार्य है कि सुधार के उपायों को कुशलतापूर्वक जारी रखा जाए ताकि भारत में सुधार को निरंतर सहायता मिलती रहे।